



Dikap kumar

13 Jun 1993

02:00 AM

Hazaribagh

Model: Web-MyKundli

Order No: 121942101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 12-13/06/1993
दिन _____: शनि-रविवार
जन्म समय _____: 02:00:00 घंटे
इष्ट _____: 52:28:43 घटी
स्थान _____: Hazaribagh
राज्य _____: Jharkhand
देश _____: India

अक्षांश _____: 24:00:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:23:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:11:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 02:11:32 घंटे
वेलान्तर _____: 00:00:14 घंटे
साम्पातिक काल _____: 19:36:13 घंटे
सूर्योदय _____: 05:00:30 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:36:07 घंटे
दिनमान _____: 13:35:37 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 28:05:31 वृष
लग्न के अंश _____: 07:54:18 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मेष - मंगल
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: उ०भाद्रपद - 1
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: आयुष्मान
करण _____: तैतिल
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गौ
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: दू-दूधेश्वर
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मिथुन

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1915	ज्येष्ठ	23
पंजाबी	संवत : 2050	ज्येष्ठ	31
बंगाली	सन् : 1400	ज्येष्ठ	30
तमिल	संवत : 2050	वैकासी	30
केरल	कोल्लम : 1168	इदवम	30
नेपाली	संवत : 2050	ज्येष्ठ	31
चैत्रादि	संवत : 2050	आषाढ़	कृष्ण 9
कार्तिकादि	संवत : 2050	ज्येष्ठ	कृष्ण 9

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 8
तिथि समाप्ति काल _____ : 24:16:15
जन्म तिथि _____ : 9
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पू०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 22:52:39 घंटे
जन्म योग _____ : उ०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग _____ : प्रीति
योग समाप्ति काल _____ : 14:12:54 घंटे
जन्म योग _____ : आयुष्मान
सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
करण समाप्ति काल _____ : 11:05:43 घंटे
जन्म करण _____ : तैतिल
भयात _____ : 07:48:23
भभोग _____ : 67:14:57
भोग्य दशा काल _____ : शनि 16 वर्ष 9 मा 17 दि

घात चक्र

मास _____ : फाल्गुन
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : आश्लेषा
योग _____ : वज्र
करण _____ : चतुष्पाद
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : सिंह
सूर्य _____ : मिथुन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : कर्क
बुध _____ : कुम्भ
गुरु _____ : सिंह
शुक्र _____ : कन्या
शनि _____ : वृष
राहु _____ : तुला

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

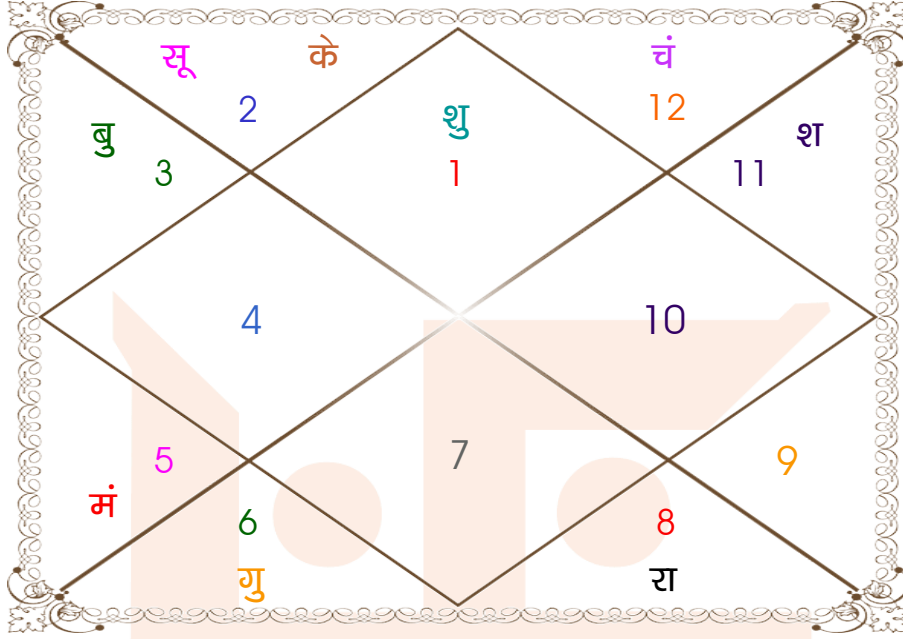
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

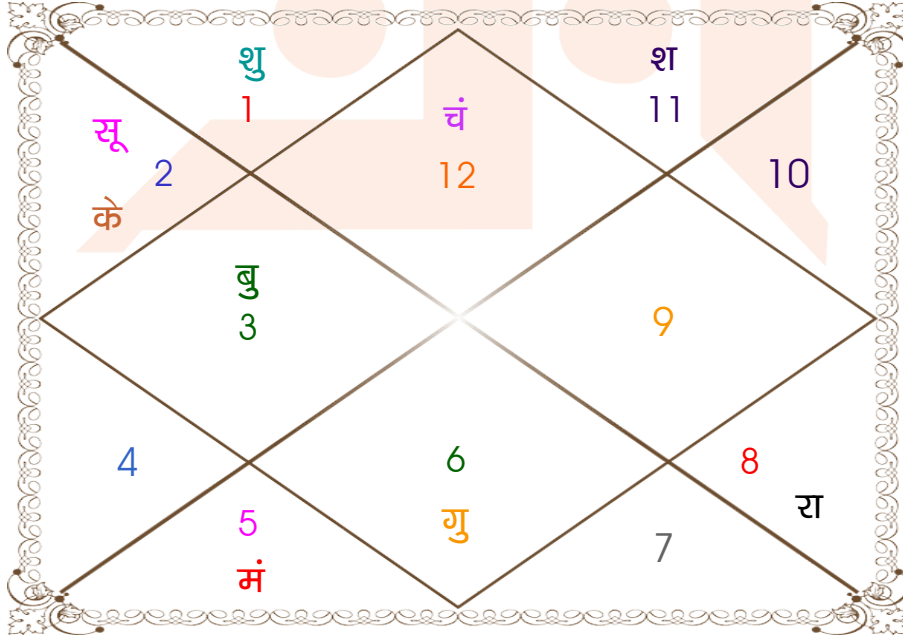
9835195382

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

चं	शु ल	के सू	बु
श			
			मं
	रा		गु

लग्न कुण्डली

के सू	शु ल	चं
बु		श
मं		
गु		रा

विंशोत्तरी
शनि 16वर्ष 9मा 17दि
शनि

13/06/1993

01/04/2111

शनि	31/03/2010
बुध	31/03/2027
केतु	31/03/2034
शुक्र	31/03/2054
सूर्य	30/03/2060
चन्द्र	31/03/2070
मंगल	31/03/2077
राहु	31/03/2095
गुरु	01/04/2111

योगिनी

भद्रिका 4वर्ष 5मा 1दि
भामरी

13/11/2024

13/11/2028

भामरी	24/04/2025
भद्रिका	13/11/2025
उल्का	15/07/2026
सिद्धा	25/04/2027
संकटा	14/03/2028
मंगला	24/04/2028
पिंगला	14/07/2028
धान्या	13/11/2028

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

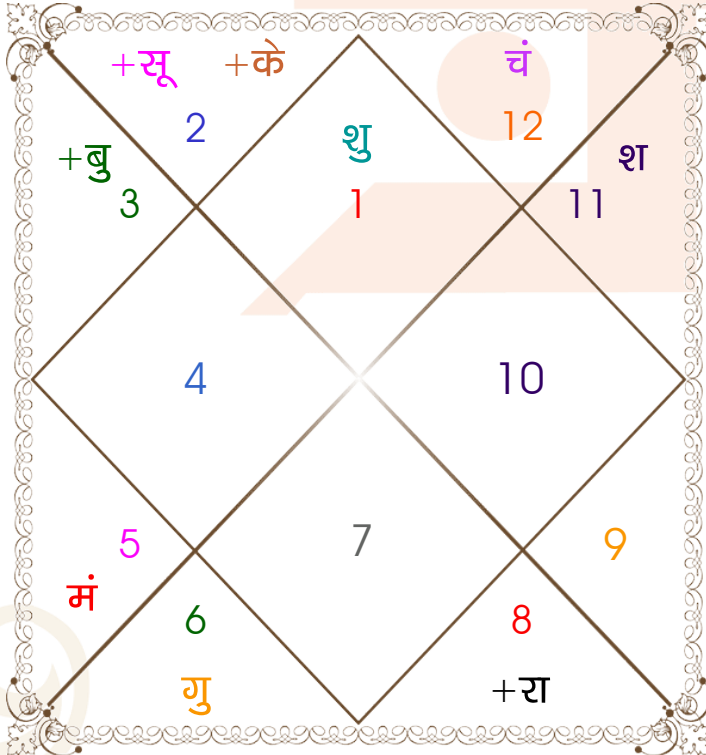
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	07:54:18	452:13:00	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	---
सूर्य			वृष	28:05:31	00:57:20	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	शनि	शत्रु राशि
चंद्र			मीन	04:52:45	11:52:55	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
मंगल			सिंह	00:16:15	00:33:44	मघा	1	10	सूर्य	केतु	केतु	मित्र राशि
बुध			मिथु	22:06:51	01:13:24	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	शनि	स्वराशि
गुरु			कन्या	11:11:41	00:02:05	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	मंगल	शत्रु राशि
शुक्र			मेष	12:20:53	00:58:23	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	बुध	सम राशि
शनि	व		कुंभ	06:33:08	00:00:16	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	चंद्र	मूलत्रिकोण
राहु			वृश्चि	18:21:34	00:00:14	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	शत्रु राशि
केतु			वृष	18:21:34	00:00:14	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	बुध	सम राशि
हर्ष	व		धनु	27:33:49	00:01:59	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	चंद्र	---
नेप	व		धनु	26:44:43	00:01:22	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	सूर्य	---
प्लूटो	व		तुला	29:36:29	00:01:25	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	चंद्र	---
दशम भाव			धनु	28:30:06	--	उत्तराषाढ़ा	--	21	गुरु	सूर्य	मंगल	--

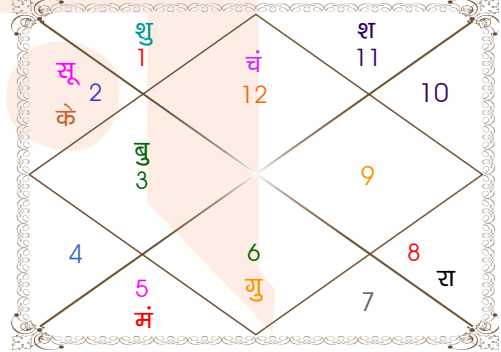
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:46:12

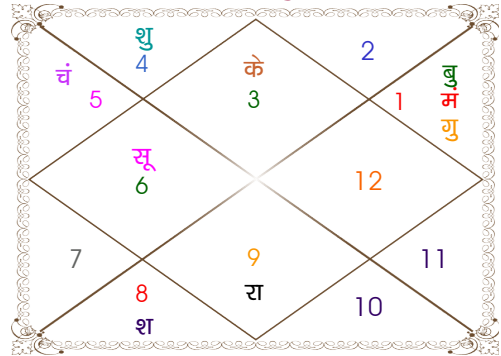
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 21:20:16	मेष 07:54:18
2	मेष 21:20:16	वृष 04:46:14
3	वृष 18:12:12	मिथुन 01:38:10
4	मिथुन 15:04:08	मिथुन 28:30:06
5	कर्क 15:04:08	सिंह 01:38:10
6	सिंह 18:12:12	कन्या 04:46:14
7	कन्या 21:20:16	तुला 07:54:18
8	तुला 21:20:16	वृश्चिक 04:46:14
9	वृश्चिक 18:12:12	धनु 01:38:10
10	धनु 15:04:08	धनु 28:30:06
11	मकर 15:04:08	कुम्भ 01:38:10
12	कुम्भ 18:12:12	मीन 04:46:14

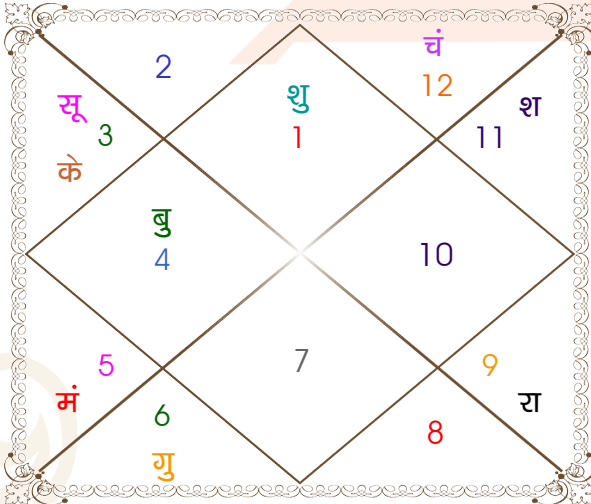
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	07:54:18
2	वृष	08:48:09
3	मिथुन	04:10:41
4	मिथुन	28:30:06
5	कर्क	25:34:40
6	सिंह	28:48:07
7	तुला	07:54:18
8	वृश्चिक	08:48:09
9	धनु	04:10:41
10	धनु	28:30:06
11	मकर	25:34:40
12	कुम्भ	28:48:07

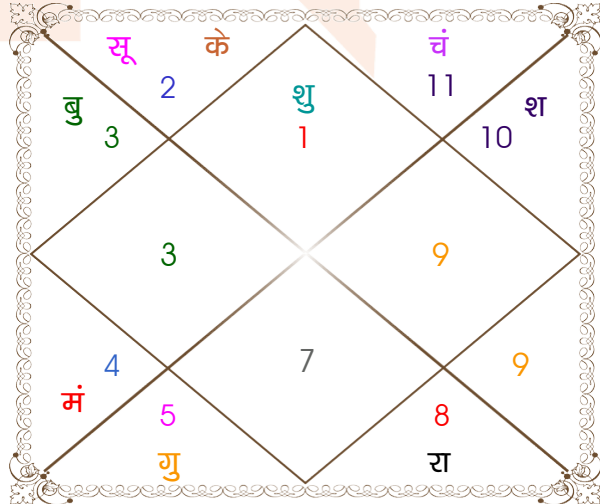
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 16 वर्ष 9 मास 17 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
13/06/1993	31/03/2010	31/03/2027	31/03/2034	31/03/2054
31/03/2010	31/03/2027	31/03/2034	31/03/2054	30/03/2060
शनि 03/04/1994	बुध 26/08/2012	केतु 27/08/2027	शुक्र 30/07/2037	सूर्य 18/07/2054
बुध 11/12/1996	केतु 24/08/2013	शुक्र 26/10/2028	सूर्य 31/07/2038	चंद्र 17/01/2055
केतु 20/01/1998	शुक्र 24/06/2016	सूर्य 03/03/2029	चंद्र 30/03/2040	मंगल 25/05/2055
शुक्र 21/03/2001	सूर्य 30/04/2017	चंद्र 02/10/2029	मंगल 30/05/2041	राहु 18/04/2056
सूर्य 03/03/2002	चंद्र 29/09/2018	मंगल 28/02/2030	राहु 30/05/2044	गुरु 04/02/2057
चंद्र 03/10/2003	मंगल 27/09/2019	राहु 19/03/2031	गुरु 29/01/2047	शनि 17/01/2058
मंगल 11/11/2004	राहु 15/04/2022	गुरु 23/02/2032	शनि 31/03/2050	बुध 23/11/2058
राहु 18/09/2007	गुरु 21/07/2024	शनि 03/04/2033	बुध 29/01/2053	केतु 31/03/2059
गुरु 31/03/2010	शनि 31/03/2027	बुध 31/03/2034	केतु 31/03/2054	शुक्र 30/03/2060

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
30/03/2060	31/03/2070	31/03/2077	31/03/2095	01/04/2111
31/03/2070	31/03/2077	31/03/2095	01/04/2111	00/00/0000
चंद्र 29/01/2061	मंगल 27/08/2070	राहु 12/12/2079	गुरु 18/05/2097	शनि 14/06/2113
मंगल 30/08/2061	राहु 14/09/2071	गुरु 06/05/2082	शनि 30/11/2099	00/00/0000
राहु 01/03/2063	गुरु 20/08/2072	शनि 12/03/2085	बुध 07/03/2102	00/00/0000
गुरु 30/06/2064	शनि 29/09/2073	बुध 30/09/2087	केतु 11/02/2103	00/00/0000
शनि 29/01/2066	बुध 26/09/2074	केतु 17/10/2088	शुक्र 12/10/2105	00/00/0000
बुध 30/06/2067	केतु 23/02/2075	शुक्र 18/10/2091	सूर्य 01/08/2106	00/00/0000
केतु 29/01/2068	शुक्र 24/04/2076	सूर्य 11/09/2092	चंद्र 01/12/2107	00/00/0000
शुक्र 29/09/2069	सूर्य 30/08/2076	चंद्र 13/03/2094	मंगल 05/11/2108	00/00/0000
सूर्य 31/03/2070	चंद्र 31/03/2077	मंगल 31/03/2095	राहु 01/04/2111	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 16 वर्ष 9 मा 16 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि	केतु - केतु	केतु - शुक्र	केतु - सूर्य	केतु - चंद्र
21/07/2024	31/03/2027	27/08/2027	26/10/2028	03/03/2029
31/03/2027	27/08/2027	26/10/2028	03/03/2029	02/10/2029
शनि 24/12/2024	केतु 09/04/2027	शुक्र 06/11/2027	सूर्य 02/11/2028	चंद्र 21/03/2029
बुध 12/05/2025	शुक्र 04/05/2027	सूर्य 28/11/2027	चंद्र 12/11/2028	मंगल 02/04/2029
केतु 08/07/2025	सूर्य 11/05/2027	चंद्र 02/01/2028	मंगल 20/11/2028	राहु 04/05/2029
शुक्र 19/12/2025	चंद्र 24/05/2027	मंगल 27/01/2028	राहु 09/12/2028	गुरु 02/06/2029
सूर्य 06/02/2026	मंगल 01/06/2027	राहु 31/03/2028	गुरु 26/12/2028	शनि 05/07/2029
चंद्र 29/04/2026	राहु 24/06/2027	गुरु 27/05/2028	शनि 15/01/2029	बुध 05/08/2029
मंगल 26/06/2026	गुरु 13/07/2027	शनि 02/08/2028	बुध 02/02/2029	केतु 17/08/2029
राहु 20/11/2026	शनि 06/08/2027	बुध 01/10/2028	केतु 10/02/2029	शुक्र 22/09/2029
गुरु 31/03/2027	बुध 27/08/2027	केतु 26/10/2028	शुक्र 03/03/2029	सूर्य 02/10/2029
केतु - मंगल	केतु - राहु	केतु - गुरु	केतु - शनि	केतु - बुध
02/10/2029	28/02/2030	19/03/2031	23/02/2032	03/04/2033
28/02/2030	19/03/2031	23/02/2032	03/04/2033	31/03/2034
मंगल 11/10/2029	राहु 27/04/2030	गुरु 03/05/2031	शनि 27/04/2032	बुध 24/05/2033
राहु 02/11/2029	गुरु 17/06/2030	शनि 26/06/2031	बुध 23/06/2032	केतु 14/06/2033
गुरु 22/11/2029	शनि 17/08/2030	बुध 14/08/2031	केतु 17/07/2032	शुक्र 13/08/2033
शनि 16/12/2029	बुध 10/10/2030	केतु 03/09/2031	शुक्र 22/09/2032	सूर्य 01/09/2033
बुध 06/01/2030	केतु 01/11/2030	शुक्र 29/10/2031	सूर्य 13/10/2032	चंद्र 01/10/2033
केतु 15/01/2030	शुक्र 04/01/2031	सूर्य 15/11/2031	चंद्र 15/11/2032	मंगल 22/10/2033
शुक्र 08/02/2030	सूर्य 24/01/2031	चंद्र 14/12/2031	मंगल 09/12/2032	राहु 15/12/2033
सूर्य 16/02/2030	चंद्र 25/02/2031	मंगल 03/01/2032	राहु 08/02/2033	गुरु 01/02/2034
चंद्र 28/02/2030	मंगल 19/03/2031	राहु 23/02/2032	गुरु 03/04/2033	शनि 31/03/2034
शुक्र - शुक्र	शुक्र - सूर्य	शुक्र - चंद्र	शुक्र - मंगल	शुक्र - राहु
31/03/2034	30/07/2037	31/07/2038	30/03/2040	30/05/2041
30/07/2037	31/07/2038	30/03/2040	30/05/2041	30/05/2044
शुक्र 20/10/2034	सूर्य 18/08/2037	चंद्र 19/09/2038	मंगल 24/04/2040	राहु 11/11/2041
सूर्य 20/12/2034	चंद्र 17/09/2037	मंगल 25/10/2038	राहु 27/06/2040	गुरु 06/04/2042
चंद्र 31/03/2035	मंगल 08/10/2037	राहु 24/01/2039	गुरु 23/08/2040	शनि 26/09/2042
मंगल 10/06/2035	राहु 02/12/2037	गुरु 15/04/2039	शनि 29/10/2040	बुध 01/03/2043
राहु 10/12/2035	गुरु 20/01/2038	शनि 21/07/2039	बुध 29/12/2040	केतु 04/05/2043
गुरु 20/05/2036	शनि 19/03/2038	बुध 15/10/2039	केतु 23/01/2041	शुक्र 02/11/2043
शनि 29/11/2036	बुध 09/05/2038	केतु 19/11/2039	शुक्र 04/04/2041	सूर्य 27/12/2043
बुध 20/05/2037	केतु 31/05/2038	शुक्र 29/02/2040	सूर्य 25/04/2041	चंद्र 27/03/2044
केतु 30/07/2037	शुक्र 31/07/2038	सूर्य 30/03/2040	चंद्र 30/05/2041	मंगल 30/05/2044

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382
9835195382

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	5
मित्र अंक	1, 4, 6, 5
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

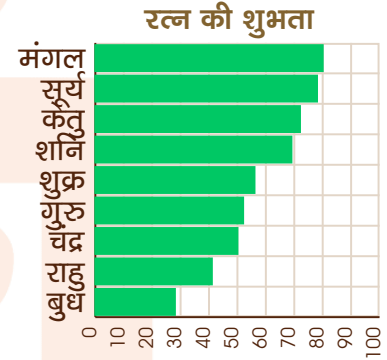
9835195382

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	80%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
माणिक्य	सूर्य	78%	धन, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	72%	धन, स्वास्थ्य
नीलम	शनि	69%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	56%	स्वास्थ्य, धन, दम्पति
पुखराज	गुरु	52%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय, कम खर्च
मोती	चंद्र	50%	कम खर्च, सुख
गोमेद	राहु	41%	दुर्घटना, सन्तति कष्ट
पन्ना	बुध	28%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	31/03/2010	66%	25%	67%	40%	52%	62%	82%	52%	59%
बुध	31/03/2027	84%	25%	80%	51%	52%	62%	69%	41%	72%
केतु	31/03/2034	66%	25%	86%	28%	52%	62%	57%	16%	84%
शुक्र	31/03/2054	66%	25%	80%	40%	52%	69%	75%	52%	78%
सूर्य	30/03/2060	91%	56%	86%	28%	58%	38%	57%	16%	59%
चंद्र	31/03/2070	84%	62%	80%	40%	52%	56%	69%	16%	59%
मंगल	31/03/2077	84%	56%	92%	3%	58%	56%	69%	16%	78%
राहु	31/03/2095	66%	25%	67%	28%	52%	62%	75%	58%	59%
गुरु	01/04/2111	84%	56%	86%	3%	64%	38%	69%	41%	72%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/06/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
अशुभ
अशुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

धनार्जन
कम खर्च
बुरा स्वास्थ्य
पराक्रम
दम्पति

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति पंचम भाव में है। पंचम भाव संतति उच्चशिक्षा तथा बुद्धि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगे तथा उनसे आपको जीवन में यथोचित सुख की प्राप्ति होगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। जीवन में आप स्वपरिश्रम एवं बुद्धिबल से उच्च शिक्षा अर्जित करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे यद्यपि इसमें यदा कदा समस्याएं भी उत्पन्न होंगी परन्तु इनका सामना करने में आप सफल रहेंगे। आपकी तीव्र बुद्धि होगी तथा यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। आपकी प्रवृत्ति किसी भी कार्य को शीघ्रता से प्रारंभ करने की रहेगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके संबंध बने रहेंगे तथा उनसे न्यूनाधिक लाभ एवं सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

पंचम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप गर्मी पित या रक्त विकार आदि से यदा कदा शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं परन्तु इसके प्रभाव से आपको विशिष्ट या अचानक धन लाभ का भी जीवन में योग बनता है। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों में भी यदा कदा आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा लेकिन उनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए शुभ रहेगी इसके प्रभाव से आप जीवन में प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेंगे तथा धनवान पुरुष के रूप में जाने जाएंगे। आपके आय स्रोत भी एक से अधिक होंगे तथा सामाजिक मान सम्मान की भी वृद्धि होगी। द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आप यदा कदा व्यय अधिक मात्रा में करेंगे जो शुभाशुभ कार्यों में होगा। इससे आपके बाएं नेत्र में कोई निशान या कमजोरी भी हो सकती है। लेकिन दाम्पत्य जीवन का उपभोग आप सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक करते रहेंगे।

इस प्रकार पंचम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में संतति तथा अन्य

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करते हुए अपने दाम्पत्य जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान् एवं सन्तोषी होता है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(31/03/2010 - 31/03/2027)

बुध की महादशा 31/03/2010 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 31/03/2027 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध तृतीय भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि नवम भाव पर है। इसके पहले आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान कुछ मामूली वाधाओं को छोड़ जीविका में प्रगति तथा धन की प्राप्ति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा के दौरान आपकी छोटी यात्राएं होंगी तथा पराक्रम और शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें शक्ति तथा स्फूर्ति प्रचुर मात्रा में होगी। फिर भी आप सतर्क होंगे और जरूरत से अधिक परिश्रम नहीं करेंगे। गले की समस्या, ब्रॉकाइटिस, स्नायविक समस्या तथा गठिया आदि बीमारियों को छोड़कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किन्तु, आवश्यक उपाय कर इन व्याधियों पर नियंत्रण किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आप अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आपको आर्थिक सफलता मिलेगी और आपको किसी लाभदायक सरकारी पद की प्राप्ति हो सकती है। आपको अपने शत्रुओं तथा विरोधियों से लाभ मिलेगा और मुकदमों में विजय मिलेगी। आपको संचार-माध्यमों के क्षेत्र में लाभ मिलेगा। जीविका-व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, सेल्समैन, शिक्षण, ट्रेवल एजेंट, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, वैमानिकी, चिकित्सक तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर, इस्तनिर्भित आदि वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता तथा सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा आप अपनी बौद्धिक उपलब्धि, समस्या-समाधान की क्षमता तथा कठिन परिश्रम के कारण पुरस्कृत किए जाएंगे। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी, आय और लाभ में वृद्धि होगी तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। कार्यों में सफलता और विरोधियों पर विजय के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आपको वाहन की प्राप्ति भी हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा में आप अपना पुराना वाहन बेच सकते हैं। बुध की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा से लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा में जमीन-जायदाद के मामले लाभदायक होंगे जबकि बुध की अन्तर्दशा के दौरान कुछ मामूली नुकसान हो सकता है।

शिक्षा :

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आप उस दशा में उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा के माध्यम से आपको कुछ आर्थिक लाभ होगा। गणित, विज्ञान, विधि, ललितकला, संचार-माध्यम, पत्रकारिता, लेखन तथा साहित्य में आपकी रुचि हो सकती है। आप हस्तकला तथा वाकपटुता में कुशल होंगे। आप तेज, कूटनीतिक, बहुमुखी एवं विज्ञान में रुचि रखने वाले हैं।

परिवार :

आपके बच्चों के लिये समय समृद्धि-दायक रहेगा और उनके लाभ तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी। आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी की यात्रा होगी, विदेशी स्रोतों से लाभ मिलेगा तथा उनकी आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपका आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपकी माता की कुछ यात्रा, व्यय तथा स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या होगी जबकि आपके पिता को व्यापार में तथा साझेदार से लाभ मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को यश और ख्याति मिलेगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी जबकि बड़ों को सट्टे में सफलता तथा लाभ मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी। आप सामाजिक व लोकप्रिय होंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आपको संचार-माध्यम से लाभ और भाइयों से सुख मिलेगा जबकि केतु के कारण कुछ मानसिक तनाव हो सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यापार में लाभ और विवाद होगा जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण सट्टे से लाभ तथा बच्चों से सुख मिल सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आराम मिलेगा जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकती है जबकि बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप यात्रा होगी और समृद्धि की प्राप्ति होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी तथा लाभ मिलेगा।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

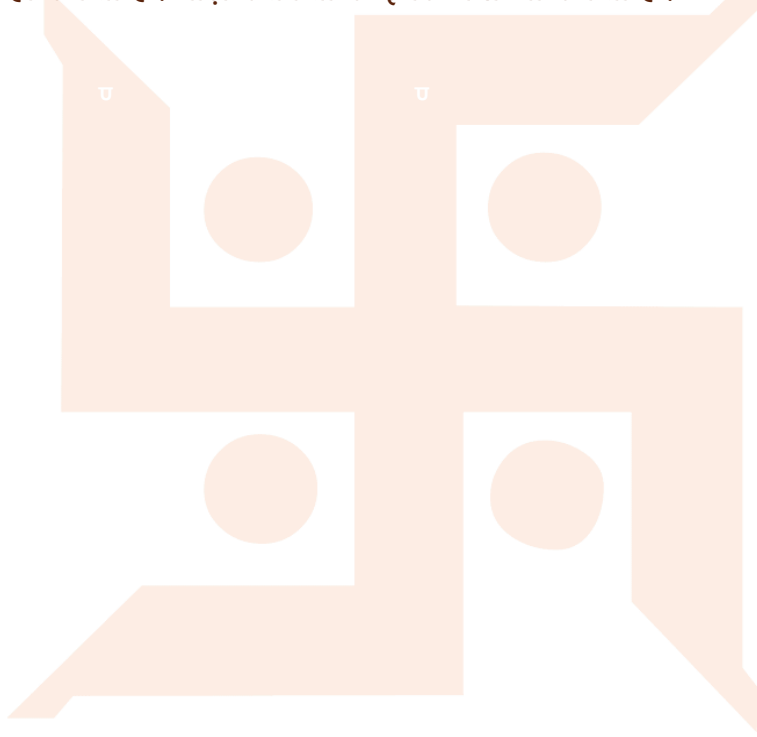
9835195382

महादशा :- केतु
(31/03/2027 - 31/03/2034)

केतु की महादशा 31/03/2027 को आरम्भ और 31/03/2034 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में केतु द्वितीय भाव में स्थित है। केतु की अष्टम भाव पर दृष्टि है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको लाभ, अच्छी शिक्षा, पारिवारिक सुख और सहे के कार्यों में लाभ हुआ होगा। केतु की इस दशा में आपको सुख तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप आपको संक्रामक बीमारी, विषाणु जाति बुखार, गले में संक्रामण, फोड़ा-फुन्सी, साँस सम्बन्धी बीमारियाँ आदि हो सकती हैं। थोड़ी सतर्कता से इनसे बचा जा सकता है।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपको विरासती सम्पत्ति अथवा अप्रत्याशित स्रोतों से धन की प्राप्ति हो सकती है। सट्टे से लाभ की सम्भावना भी है व्यवसाय-व्यापार में भी धनोपार्जन अच्छा होगा। जीविका के लिये कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर, लेखन, गणित, विदेशी भाषा, दवा, वायु सेना, लेख-कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़े, रत्न, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, लेखन-सामग्री, किताब, समाचार पत्र, घड़ी आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, पदोन्नति तथा आय में वृद्धि होगी। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहायकों का सहयोग और वरिष्ठ कर्मचारियों की सदेख मिलेगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा और उनकी आय अच्छी होगी। आपको लक्ष्य की प्राप्ति होगी तथा व्यापार का विस्तार और व्यावसायिक गतिविधियों में वृद्धि होगी।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सारा सुख मिलेगा। आपकी जमीन-जायदाद तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी। सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। आपको सुन्दर वाहन का सुख मिलेगा। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्राएं होंगी। मामूली नुकसान के प्रति सावधानी बरतें। मंगल की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राओं की सम्भावना है जो लाभदायक होंगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप तेज और क्रियाशील हैं और सभी प्रतियोगिताओं तथा परीक्षाओं में अच्छा करेंगे। तकनीकी विषयों, कम्प्यूटर-प्रौद्योगिकी, लेखा-कार्य, भोजन प्रौद्योगिकी लेखन, गणित और बैंकिंग में आपकी रुचि होगी। आप बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे सफल और समृद्धिशाली होंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी के जीवन में कुछ परिवर्तन, अचानक लाभ और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। परिवार में अच्छे सम्बन्ध बनायें रखने के लिये आपको कौशल तथा धैर्य से काम लेना होगा। आपकी माता को सभी प्रकार का लाभ, वाहन सुख और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी जबकि आपके पिता को विरोधियों पर विजय मिलेगी और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी। आपके छोटे भाई-बहनों का कुछ व्यय होगा, उनकी यात्रा और उनके जीवन में कुछ परिवर्तन होगा जबकि बड़े भाई-बहनों को सट्टे में लाभ, तकनीकी शिक्षा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सभी सुख और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। शुक्र की अन्तर्दशा में आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और सम्पत्ति, सुख और सफलता की प्राप्ति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में वाहन और मकान की प्राप्ति होगी और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी जबकि चंद्र की अन्तर्दशा के दौरान लोकप्रियता और भाई-बहनों

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

से लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यय होगा जबकि राहु कुछ समस्या खड़ी कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा में कुछ स्वास्थ्य समस्या और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा के दौरान जीवन-वृत्ति में सफलता और समृद्धि मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा में अच्छी शिक्षा, सट्टे की गतिविधियों में सफलता और सुख मिलेगा।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**अंतर्दशा :- केतु - केतु
(31/03/2027 - 27/08/2027)**

आपके लिए केतु महादशा 31/03/2027 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 31/03/2027 को प्रारंभ होकर 27/08/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे। रिश्तेदारों के साथ कुछ मतभेद हो सकते हैं मगर वे शांतिपूर्वक सुलझ जाएंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, इच्छाएं पूर्ण होंगी, महत्वपूर्ण व्यक्तियों से संपर्क होगा जो लाभकारी रहेगा। अचानक धनलाभ हो सकता है। साझेदार से लाभ होगा, विरासत में धन आ सकता है। तंत्र-मंत्र में सफलता मिल सकती है। विदेश यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी को विरासत में धन मिल सकता है। आपके पिता लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। माता का धनार्जन उत्तम होगा, सफल होंगी, सुख-साधन उपलब्ध होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए खर्च, उत्तम शिक्षा का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, लोकप्रिय बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारियों से उत्तम संबंध रहेंगे, भाग्यशाली होंगे। परामर्शदाताओं को निवेश से लाभ होगा, धनी बनेंगे। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है; अचानक धनागम हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मुख और दांतों की व्याधियों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए भूरा कुत्ता पालें।

**अंतर्दशा :- केतु - शुक्र
(27/08/2027 - 26/10/2028)**

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी।

इस अवधि में आप भाग्यशाली रहेंगे। उत्तम वस्त्र, इत्र और विलास सामग्री का आनंद लेंगे। उच्चपद प्राप्त हो सकता है। सब सुखों का भोग करेंगे। वातावरण हर्षमय रहेगा। विवाह हो सकता है। व्यापार में लाभ होगा। प्रसन्नचित्त और भाग्यशाली रहेंगे। जीवनसाथी से धन का लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे, उन्हें सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके पिता को संतान से सुख मिलेगा। माता लोकप्रिय होंगी, सफलता मिलेगी, सुख-साधन और उत्तम मित्र उपलब्ध रहेंगे। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता और आकांक्षाओं की पूर्ति का संकेत है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आपकी संतान प्रसन्न और संतुष्ट रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी और भाग्यशाली होंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं। परामर्शदाताओं को निवेश से लाभ होगा, धनार्जन उत्तम होगा। व्यापारियों का धनार्जन अच्छा होगा, साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए सफेद वस्त्र, चावल और दही दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - सूर्य
(26/10/2028 - 03/03/2029)

आपके लिए केतु महादशा 31/03/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 26/10/2028 को प्रारंभ होकर 03/03/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आपका धनार्जन उत्तम रहेगा। शिक्षा में सफल होंगे। रुके काम पूरे होंगे। व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा। प्रसन्नचित्त रहेंगे। विरासत या बीमे द्वारा धन आ सकता है। कार्यक्षेत्र में उतार-चढ़ाव आएंगे; फिर भी आप सफल रहेंगे। धर्म और अध्यात्म में रुचि हो सकती है। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। कुछ समय के लिए स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को अचानक धनलाभ हो सकता है, वे कार्यक्षेत्र में उतार-चढ़ाव के बावजूद सफल रहेंगे। आपके पिता धनी बनेंगे, उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं, स्पर्धा में विजयी रहेंगे। माता सफल रहेंगी।

आपके भाई-बहनों के खर्चे बढ़ सकते हैं, शिक्षा उत्तम होगी, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सफल रहेंगे, उच्चपद प्राप्त करेंगे, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारियों के कार्य में अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है।

स्वास्थ्य पर, विशेषकर नेत्रों पर ध्यान देना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए गेहूं, गुड़ और तांबे का दान करें।

**अंतर्दशा :- केतु - चन्द्र
(03/03/2029 - 02/10/2029)**

आपके लिए केतु महादशा 31/03/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 03/03/2029 से प्रारंभ होकर 02/10/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आप अध्यात्म में अच्छी प्रगति कर सकते हैं। ज्ञानार्जन उत्तम होगा। धार्मिक प्रवृत्ति के होंगे। यात्राएं हो सकती हैं। मातहतों से उत्तम संबंध होंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। मामा के माध्यम से लाभ हो सकता है। वांछित वस्तुएं उपलब्ध होंगी; संतुष्ट रहेंगे।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा, उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा, शत्रुओं पर विजय होगी। आपके पिता धनी बनेंगे, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, खेती या भूमि से लाभ हो सकता है। माता भाग्यशाली होंगी, प्रसन्न रहेंगी, उनकी यात्राएं हो सकती हैं।

आपके छोटे भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी; वे सफल होंगे, प्रसिद्ध बनेंगे। आपके बड़े भाई-बहनों का धनार्जन उत्तम होगा, सुख साधन संपन्न होंगे, उनका घरेलू जीवन सुखी होगा।

आपकी संतान के वातावरण में कुछ परिवर्तन हो सकता है; उन्हें लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला हो सकता है, खर्च बढ़ सकते हैं, यात्रा हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो सामूहिक गतिविधियों से लाभ होगा, यात्राएं हो सकती हैं। परामर्शदाता सफल रहेंगे। व्यापारियों को स्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है।

स्वास्थ्य का, विशेषकर नेत्रों का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

ॐ सों सोमाय नमः

**अंतर्दशा :- केतु - मंगल
(02/10/2029 - 28/02/2030)**

आपके लिए केतु की महादशा 31/03/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 02/10/2029 को प्रारंभ होकर 28/02/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। दिल खोल कर पैसा खर्च कर सकते हैं। सफलता में बाधा आ सकती है। पुराना ढांचा बदलेगा, नयापन आएगा। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। कार्यक्षमता उत्तम होगी। विरासत से या जीवनसाथी के धन से लाभ हो सकता है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आपके जीवनसाथी की आय उत्तम होगी, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि होगी। माता की आय उत्तम होगी, घरेलू सुख अच्छा होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए खेलकूद में रुचि, साहित्य से लगाव और संभवतः विवाह का संकेत है। आपके बड़े भाई-बहनों को साझेदारी या व्यापार से लाभ होगा, विवाह हो सकता है।

आपकी संतान सफल होगी, स्पर्धियों पर विजय होगी, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला या परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा, निवेश लाभप्रद हो सकता है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए तंदूर में मीठी रोटी बनाकर उसे दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - राहु (28/02/2030 - 19/03/2031)

आपके लिए केतु महादशा 31/03/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 28/02/2030 को प्रारंभ होकर 19/03/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपको विरासत, बीमा आदि से धनलाभ हो सकता है। जीवनसाथी या साझेदार के माध्यम से लाभ हो सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। सब मामलों में सावधानी बरतना श्रेयस्कर रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, भौतिक सुखों की इच्छा पूर्ण होगी। प्रभावशाली व्यक्तियों से संपर्क बढ़ेगा जो लाभकारी रहेगा। शिक्षा उत्तम होगी। पारिवारिक जीवन हर्षमय रहेगा।

आपके जीवनसाथी की आय बढ़ेगी, इच्छाएं पूर्ण होंगी, प्रसन्नता में वृद्धि होगी। आपके पिता की यात्राएं हो सकती हैं। माता धनी बनेंगी, उनका भाग्य चमकेगा। आपके भाई-बहनों के लिए स्पर्धियों पर सफलता, प्रसिद्धि और कार्यों में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान की नींव सुदृढ़ होगी; शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, प्रसन्न रहेंगे, उच्च पद मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। मामूली व्याधियों को भी अनदेखा न करें। गठिया आदि रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार के दिन शिवजी की भैरव रूप में उपासना करें।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382